2

मातृ स्वास्थ्य मॉड्यूल

2

गर्भावस्था के दौरान कृमी नाशन

(Deworming in Pregnancy)

राजस्थान सरकार

चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

राजस्थान

तकनीकी सहयोग- युनिसेफ, जयपुर

मॉड्यूल हेतु क्रमिक (Cascade) सारणी :–

राज्य स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः जिला स्तर संभागी प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।
जिला स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः ब्लॉक स्तर संभागी प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।
ब्लॉक स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः उपकेन्द्र स्तर से चयनित पीयर सुपरवाईजर (ए.एन.एम एवं आशा) प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।
सेक्टर स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः पीयर सुपरवाइजर द्वारा समुदाय स्तर पर कार्यरत समस्त फ्रन्ट लाइन कार्यकर्ताओ को प्रशिक्षण दिया जायेगा।

इस मॉड्यूल के लिये **सम्भावित समय – 2 घण्टा**

आवश्यक सामग्री :–

- मॉड्यूल की प्रति
  - हैण्डआउट 2.1 {कृमी (Deworming) नाशक नावाचार (प्रोटोकॉल)}
  - हैण्डआउट 2.2 {चिकित्साकर्मियों की भुमिका}
- कुर्सियॉ एवं दरी
- चॉक एंव बोर्ड

प्रस्तावना

मिट्टी में पाये जाने वाले कीड़ो के कारण पेट में होने वाला संक्रमण विश्व में एक आम बात है। जिसका कुपोषण एंव बीमारियों का बोझ बढाने में एक काफी बड़ा योगदान है। सबसे आम परजीवी एस्केरिस लुम्ब्रिकोइदेस (गोल कृमि), ट्रीचुरिस ट्रीचुरिया (व्हीप वार्म), एनसाईलोस्टोमा ड्युडीनेल एंव निकेटर अमेरिकन्स (हुक वर्म) है। हुक वर्म एक आम परजीवी है जो विश्व में रक्त अल्पता (एनिमिया) को बढाने में काफी बढा योगदान रखता है।

गोल कृमि

व्हीप वार्म

हुक वर्म

वर्ष 2000 में भारत में समुदाय आधारित अध्ययन किया गया था जिसके अन्तर्गत वह गर्भवती महिलाए जिनको आई.एफ.ए. सप्लीमेन्ट, मेबेन्डाजोल एवं आई.ई.सी दी गयी थी का अन्य गर्भवती महिलाओं की तुलना में रक्त अल्पता (एनिमिया) का स्तर कम था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एन्डेमिक क्षेत्रों में रहने वाले लोगो के लिये समय–समय पर कृमि नाशक दवाए दी जाने की सिफारिश करता है।

दक्षिण एशिया के देशों में हुए अध्ययनो से यह ज्ञात हुआ है कृमिनाशक उपचार गर्भवती महिला की रक्त अल्पता, कम वजन के शिशु एवं शिशु मृत्यु में कमी लाता है।

देश/राज्य में कृमि रोग का प्रसार

भारत में ऑतो/पेट के कीडों का प्रसार 5 प्रतिशत से 76 प्रतिशत के मध्य है जो अन्य विकासशील देशो के बराबर है। जिसके कारण रक्त अल्पता खासकर गर्भवती महिलाओं में एक आम स्वास्थ्य समस्या है। देश के वह क्षेत्र जहॉ हुक वर्म परजीवी का प्रकोप अत्यधिक है वहॉ 90 प्रतिशत गर्भवती महिलाए रक्त अल्पता (एनिमिया) से ग्रसित है।

मॉड्युल के उद्वेश्य

1. ए.एन.सी की रुटिन जॉचो में कृमि रोग जॉच को सम्मिलित किये जाने के बारे में जानकारी देना।
2. गर्भावस्था में कृमी नाशक प्रोटोकॉल, एलबेन्डाजोल दवा के सामान्य दुष्प्रभाव एवं गर्भवती महिला को दिये जाने वाले परामर्श को समझाना।
3. गर्भावस्था में कृमी नाशन में चिकित्साकर्मियों की प्रभावी भुमिका को समझाना। (प्रतिभागियों से खडे होकर जोर से हैण्डआऊट 2.2 पढवाये।)
4. कृमि रोग का पता लगाकर एल्बेन्डाजोल के माध्यम से गर्भवती का उपचार करने को समझाना।
5. गर्भवती माता से उसके शिशु में होने वाले कृमि रोग की रोकथाम के उपाय बताना।

कृमि (Deworming) नाशक उपचार हेतु लक्षित समुह

1. सभी गर्भवती महिलाए।
2. वह क्षेत्र जहॉ हुक वर्म परजीवी का प्रकोप अधिक है वहॉ रहने वाली गर्भवती महिलाओं में इसकी सम्भवाना आम गर्भवती महिलाओं से 20% अधिक होती है।

कृमि (Deworming) नाशक प्रबन्धन हेतु आवश्यक तैयारिया :–

1. सभी स्वास्थ्य केन्द्रों एवं आउटरीच सत्रों पर हिमोग्लोबीन जांच की सुविधा।
2. उपस्वास्थ्य केन्द्र से उपर के स्वास्थ्य केन्द्र स्तर पर अन्य आवश्यक प्रयोगशाला जॉच सुविधा उपलब्ध कराना।
3. आवश्यक सामग्री एवं मानव संसाधन।
4. एल्बेन्डाजोल टेबलेट 400 मिलीग्राम दवायें ।
5. प्रशिक्षित मानव संसाधन।
6. प्रथम रेफरल यूनिट/आकस्मिक प्रसुति देखभाल हेतु उचित रेफरल।

कृमी (Deworming) नाशक नावाचार (प्रोटोकॉल)

अब हम गर्भावस्था के दौरान कृमी (Deworming) नाशन हेतु प्रयुक्त होने वाली दवा एल्बेन्डाजोल टेबलेट के प्रोटोकॉल के बारे मे जानकारी प्राप्त करेगे। पर्यवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियों में से किसी एक को खडा कर के जोर से हैण्डआऊट 2.1 पढ़ने को कहें।

चिकित्साकर्मियों की भुमिका

अब हम गर्भावस्था के दौरान कृमी (Deworming) नाशन में विभिन्न स्तर के चिकित्साकर्मियों की भुमिका के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेगें। पर्यवेक्षक प्रतिभागियों में से किसी एक को खडा कर के जोर से हैण्डआऊट 2.2 पढ़ने को कहें।

रिर्पोटिग

- चिकित्साकर्मी द्वारा ए.एन.सी/ममता कार्ड के अन्दर इसका इन्द्राज करना चाहिए।
- ए.एन.सी रजिस्टर में एक प्रथक से कॉलम बना कर इसका इन्द्राज किया जाना है।
- प्रत्येक माह ए.एन.सी रिर्पोटिंग के साथ इसे प्रत्येक स्तर से भिजवाया जाना है।
- आर.सी.एच.ओ के माध्यम से इसे पीसीटीएस/एचएमआईएस में इन्द्राज करवाया जाना चाहिए।

मोनिटरिंग

- प्रत्येक मोनिटर को अपनी चैक लिस्ट में सम्मिलित करना चाहिए।
- आशा द्वारा गृह भेट के समय दवा लिए जाने की पुष्टि की जानी चाहिए।
- ए.एन.एम के द्वारा ए.एन.सी एवं पी.एन.सी के समय इसकी जॉच की जानी चाहिए।

प्रशिक्षण माड्युल का सारांश

1. कृमि रोग हेतु गर्भवती महिला को प्रथम तिमाही के उपरान्त दवा दी जानी चाहिए। विशेषकर गर्भवस्था के द्वितीय तिमाही में इसे दिया जाना चाहिए।
2. वह क्षेत्र जहॉ हुक वर्म परजीवी का प्रकोप अधिक है वहॉ रहने वाली गर्भवती महिलाओं में इसकी सम्भवाना आम गर्भवती महिलाओं से 20 प्रतिशत अधिक होती है।
3. कृमि रोग की तीव्रता की जानकारी के अभाव में प्रत्येक गर्भवती महिला को एक बार डिवर्मिग की दवा गर्भावस्था के प्रथम तिमाही के उपरान्त विशेषकर गर्भवस्था के द्वितीय तिमाही में दी जानी चाहिए।
4. डिवर्मिग हेतु गर्भवती महिला को एलबेन्डाजोल 400 एम.जी देनी चाहिए।
5. यह दवा DOT प्रणाली के आधार पर चिकित्साकर्मी को अपने सामने गर्भवती महिला को खिलानी चाहिए।
6. सफाई एवं स्वच्छता को बढावा दिया जाना चाहिए।

हैण्डआउट 2.1

कृमी (Deworming) नाशक नावाचार (प्रोटोकॉल)

गर्भावस्था में कृमी (Deworming) नाशक नावाचार (प्रोटोकॉल)

- कृमी नाशन हेतु यह दवा गर्भावस्था की प्रथम तिमाही के उपरान्त विशेषकर द्वितीय तिमाही में ही दी जाए।
- कृमी नाशन हेतु एल्बेनडाजोल दवा (400 मिली ग्राम) की एक खुराक ही दी जाए।
- स्वास्थ्यकर्मि को प्रसव पूर्व जॉच के दौरान एल्बेनडाजोल दवा गर्भवती महिला को देनी चाहिए एवं DOTs प्रणाली के अनुसार यह ध्यान रखना चाहिए की गर्भवती महिला दवा उसके सामने ही लेवे।
- एल्बेनडाजोल दवा (400 मिली ग्राम) की हमेशा कमरे के सामान्य तापमान (15 से 30 डिग्री सेल्शियस) में ही रखना चाहिए तथा इसे गर्मी, नमी एवं रोशनी से दूर रखना चाहिए।
- प्रत्येक एमसीएचएन सत्र के दौरान एल्बेनडाजोल दवा उपलब्ध होनी चाहिए।

गर्भवती महिला हेतु **कृमी नाशक नावाचार (प्रोटोकॉल)**

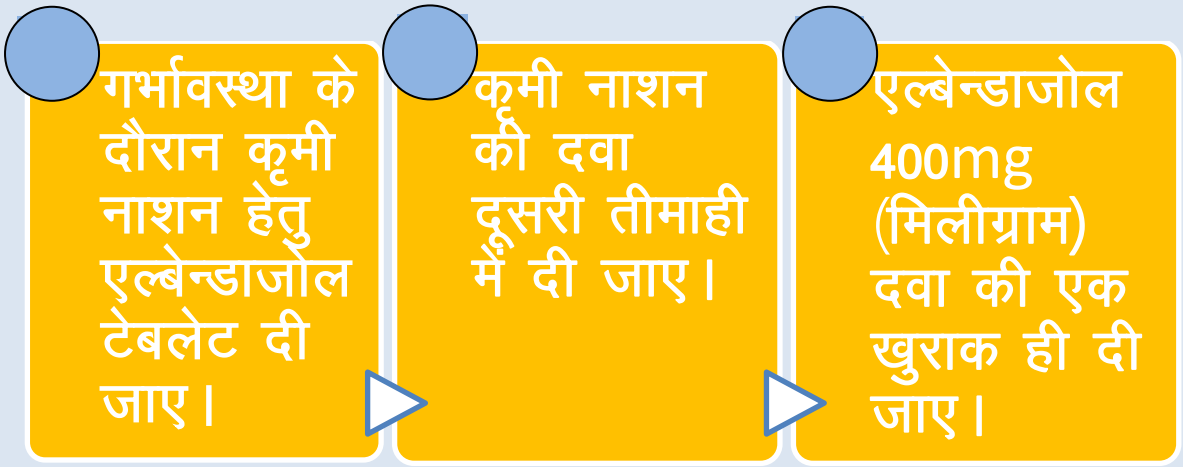

एलबेन्डाजोल दवा के सामान्य दुष्प्रभाव

- एलबेन्डाजोल दवा के वैसे तो कोई दुष्प्रभाव नही है फिर भी किसी महिला को इस दवा के उपरान्त जुकाम, पेट में दर्द, जिमिचलाना अथवा चक्कर आने की शिकायत हो सकती है।
- गर्भवती को इसके बारे में बताये एवं समझाए की इससे उसे अथवा उसके होने वाले शिशु को कोई नुकसान नही है।
- कोई अन्य दुष्प्रभाव होने अथवा गर्भवती महिला की तबयीत खराब होने पर अविलम्ब नजदीकी चिकित्सा केन्द्र पर सम्पर्क करे।

सामान्य परामर्श

गर्भवती महिला को कर्मी रोग से बचाव हेतु निम्न सलाह/परामर्श दिये जाने चाहिए।

नाखुनों को साफ रखे।	
कृमी रोग से बचाव हेतु गर्भवती महिला को हमेशा चप्पल पहन कर रखना चाहिए।	
प्रयोग में लेने से पूर्व फल एवं सब्जियों को अच्छे से धोना चाहिए।	
मानव अपशिष्ठ का सही प्रकार से संधारण करना चाहिए एंव अपने आस–पास का वातावरण स्वच्छ रखना चाहिए।	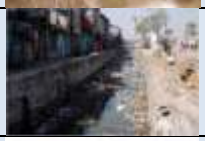
हमेशा शौच जाने के लिए शौचालय का प्रयोग करे।	
खाने से पहले एवं शौच के उपरान्त साबुन से हाथ अच्छी प्रकार से धोने चाहिए।	
पीने के लिए स्वच्छ पानी का प्रयोग करना चाहिए।	
गर्भवती महिला को अपनी शारिरीक स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।	
अपने आस–पास कचरा अथवा पानी इकटठा नही होने देना चाहिए।	
आशा को परामर्श के माध्यम से गर्भवती महिला को स्वच्छ रहने एवं अपने आस–पास का वातावरण स्वच्छ रखने हेतु प्रेरित करना चाहिए।	

हैण्डआउट 2.2

चिकित्साकर्मियों की भुमिका

चिकित्साकर्मियो की भुमिका

- प्रत्येक चिकित्साकर्मी के पास चाहे वह किसी भी स्तर (चिकित्सा अधिकारी/एएनएम/स्टॉफ नर्स) का हो कृमी रोग की दवा हमेशा होनी चाहिए।
- प्रत्येक चिकित्साकर्मी को निम्न बात का ज्ञान अवश्य होना चाहिए
  - ❖ दवा दिये जाने का समय एवं मात्रा
  - ❖ दवा के साधारण दुष्प्रभाव
  - ❖ दुष्प्रभाव की स्थिति मे अपनायी जाने वाली गतिविधि
- चिकित्साकर्मी को किसी भी गम्भीर दुष्प्रभाव की स्थिति में तुरन्त अपने उच्च चिकित्सा संस्था/अधिकारी से सम्पर्क करना चाहिए।

स्वास्थ्यकर्मियों की भूमिकायें :–

1. राज्य/जिला शिशु एवं प्रजनन अधिकारी

- गर्भवती महिलाओं की कृमि रोग की जॉच का कार्य योजना अनुसार क्रियान्वयन करवाना।
- स्वास्थ्य केन्द्रों पर कृमि रोग जॉच किटों एवं दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना।
- अन्तर एवं अन्तरा विभागीय समन्वय स्थापित करना।
- संबधित चिकित्सा कर्मियों का प्रशिक्षण करवाना।
- रिपोर्ट एवं रेकार्ड का संधारण करवा प्रत्येक माह एचएमआईएस में रिर्पोट करवाया जाना सुनिश्चित करवाना।

2. चिकित्सा अधिकारी

- सभी गर्भवती माताओं को उपचार उपलब्ध करवाना।
- कृमि सक्रंमित गर्भवती महिला की जॉच एंव उपचार सुविधा उपलब्ध करवाना।
- कृमि सक्रंमित महिला का उपचार पश्चात फोलोअप करना।
- रिपोर्ट एवं रेकार्ड की जॉच करना

3. ए.एन.एम/स्टॉफ नर्स

- गर्भवती महिलाओं में कृमि रोग जॉच हेतु जागरुकता पैदा करना।
- सभी गर्भवती महिलाओं का पंजीयन कर उनकी पहली ए.एन.सी विजिट में कृमि रोग की जॉच करना।
- एन.एन.सी रजिस्टर में कृमि रोग जॉच का रेकार्ड रखना।
- गर्भवती महिला को एल्बेन्डाजोल टेबलेट अपने सामने ही खिलाना।
- गर्भवती महिला को दवा के साधारण दुष्प्रभावों की जानकारी देना।
- कृमि रोग संक्रमित माता एवं बच्चों का उपचार हेतु फोलोअप करना।

4 आशा की भुमिका

- गर्भवती महिला की समय पर ए.एन.सी जॉच कराने हेतु उसे प्रेरित करना।
- सभी खाने की वस्तुओं को साफ पानी से धो कर प्रयोग में लेने, शौचालय का उपयोग, साबुन से हाथ धोने, चप्पल का प्रयोग, नाखुन की सफाई एंव घर के आस–पास स्वच्छता बनाये रखने हेतु गर्भवती एवं उसके परिजनों को प्रेरित करना।
- एल्बेन्डजोल दवा के सामान्य दुष्प्रभावों की जानकारी देना।
- नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र एवं प्रथम रैफरल युनिट के बारे में बताना।